

## मुगलकालीन भारत की संचार व्यवस्था

### सारांश

सक्षम संचार प्रणाली ही किसी समाज को संसार में होने वाले विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक एवं वाणिज्यिक परिवर्तनों का ज्ञान कराती है, जिन्हें आत्मसात करके सामाजिक व्यवस्था गतिमान बनी रहती है तथा वाणिज्यिक ढांचा विकासशील रहता है। यातायात एवं संचार व्यवस्था की दक्षता से ही विशाल साम्राज्य की केन्द्रीय सत्ता का विभिन्न प्रांतों एवं सूबों में सम्पर्क बना रहता है। यदि मुगलकाल में सक्षम संचार व्यवस्था न रही होती तो इतना विशाल मुगल साम्राज्य इतने समय तक स्थायी न रहा होता।

**मुख्य शब्द :** भारतीय अर्थव्यवस्था, खाद्यान्न उत्पादन, लघु एवं सीमान्त किसान।

### प्रस्तावना

किसी राजनैतिक समाज के प्रभावी संचालन के लिए सक्षम संचार प्रणाली एक अपरिहार्य आवश्यकता है जो सम्पूर्ण साम्राज्य में सूचनाओं का प्रवाह बनाए रखती है तथा प्रशासन बिना किसी परेशानी के घट रही घटनाओं के अनुसार अपनी नीति का निर्धारण कर सकता है। मध्यकाल में सत्ता शक्ति के सिद्धान्त पर आधारित थी।<sup>1</sup> अतः कोई भी शक्तिशाली व्यक्ति अपनी सैन्यकुशलता के बल पर सत्ता पर कब्जा कर सकता था अतएवं प्रशासन की दक्षता के लिए संचार तंत्र की दक्षता अत्यन्त आवश्यक है। यातायात के साधनों एवं संचार के स्रोतों की आवश्यकता हर काल में प्रत्येक देश एवं समाज को रही है। अतएवं आवश्यकतानुसार सम्राटों एवं बादशाहों ने उसके उत्थान के लिए कार्य किए।

### अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत प्रपत्र का उद्देश्य मुगलकालीन भारत की संचार व्यवस्था का अध्ययन करना है।

### भौगोलिक अध्ययन

मुगलों ने भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की मूलतः शहरी होने के कारण उन्होंने नये शहरों का निर्माण एवं विकास कराया।<sup>2</sup> व्यापारियों तथा व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा, मंडियों एवं बाजारों की व्यवस्था तथा स्थानीय प्रशासन की उत्तम देखभाल मुगल शासकों के प्रमुख उद्देश्य थे ताकि हिन्दुस्तान का अन्य देशों तथा देश के विभिन्न नगरों का पारस्परिक व्यापारिक सम्बन्ध बना रह सके। अतएवं इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मुगल बादशाहों में समय-समय पर यातायात एवं संचार व्यवस्था में सुधार के लिए प्रयत्न किए। बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण 13वीं तथा 14वीं शती में आन्तरिक व्यापार में वृद्धि हुयी। अतः पुराने व्यापारिक मार्गों जो जंगलों के अतिक्रमण का शिकार हो चुके थे, साफ करके खोल दिया गया। नये मार्गों का निर्माण करवाया गया। मार्गों के किनारे यात्रियों व व्यापारियों के ठहरने के लिए कारवां सराए बनवायी गयी, जो पोस्टल स्टेशनों के रूप व्यापारियों के ठहरने के लिए कारवां सराए बनवायी गयी, जो पोस्टल स्टेशनों के रूप में भी काम करती थी। यद्यपि उस समय संचार व्यवस्था तकनीकी रूप से इतनी अधिक विकसित नहीं थी परन्तु फिर भी सड़क तथा जलमार्गों द्वारा समुचित यातायात एवं व्यापार होता था। सामान के परिवहन के लिए जलमार्गों को अधिक उपयुक्त समझा जाता था क्योंकि स्थल मार्ग खर्चीले होते थे तथा उनपर लूटपाट का भय भी बना रहता था थल मार्गों पर चौपायों, बैलगाड़ियों तथा कुलियों का उपयोग सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के



### राधाकृष्ण दुबे

एसोसिएट प्रोफेसर,  
भूगोल विभाग,  
एम0डी0पी0जी0 कालेज,  
प्रतापगढ़ (उ0प्र0)।  
इलाहाबाद राज्य  
विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

लिए किया जाता था। क्षेत्रफल की दृष्टि से मुगलकालीन भारत एक विशाल साम्राज्य था, जिसकी प्राकृतिक विविधता उल्लेखनीय थी, इसमें शामिल घने जंगलों, पहाड़ों, मैदानी भागों, पठारी क्षेत्रों, नदियों तथा पर्वत श्रृंखलाओं ने तत्कालीन राजनैतिक एवं प्रशासनिक समाज को काफी हद तक प्रभावित किया।<sup>3</sup> विशाल साम्राज्य में शांति बनाए रखने तथा व्यापार को बढ़ावा देना ही अधिकांश भारतीय शासकों का उद्देश्य था जिसके लिए अच्छी सड़क युक्त संचार व्यवस्था अत्यावश्यक थी। सिंधु घाटी सभ्यता के नगरों के आपस में सड़कों द्वारा जुड़े होने के कोई प्रमाण नहीं मिलते हैं सम्भवतः उस समय नगर सड़क मार्गों द्वारा नहीं जुड़े रहे होंगे क्योंकि तब तक लोहे का प्रयोग नहीं हो रहा था तथा लोहे के औजारों के बिना घने जंगलों में रास्ता बनाना सम्भव नहीं हुआ होगा।<sup>4</sup> दूसरी ओर आर्यों द्वारा चारागाहों के निकट ग्राम समाज की स्थापना इस काल में गिने चुने व्यापारिक केन्द्रों का होना तथा सड़क मार्गों की अनुपस्थिति को प्रदर्शित करता है।

बुद्ध के समय तक शहरीकरण बढ़ने के साथ-साथ लोगों ने यात्राएं करना प्रारम्भ<sup>5</sup> कर दिया था। लोग मुख्यतः उत्तरी भारत के पहचाने जा चुके मार्गों द्वारा यात्राएं करते थे। मौर्य काल तक ऐसे मार्ग पूरे उपमहाद्वीप में बनाए जा चुके थे। मेगास्थनीज ने मौर्यकाल की एक सड़क जो पाटलीपुत्र को साम्राज्य के उत्तरी-पश्चिमी भाग को जोड़ती थी का विवरण देते हुए बताया है कि इस सड़क के किनारे सराए तथा डाकघर बने हुए थे।<sup>6</sup> ऐसा समझा जाता है कि उस समय अर्मेनियन शासकों जिनका प्रभुत्व भारत के सिंध तथा रावी तक था द्वारा अपनायी जाने वाली सड़क एवं संचार व्यवस्था का ज्ञान मौर्य शासकों को नहीं था।<sup>7</sup> सम्भवतः मौर्य शासकों द्वारा अपनायी जाने वाली परिवहन प्रणाली का ही विकास गुप्त सम्राट हर्षवर्धन द्वारा भी किया गया होगा।

हर्षवर्धन के पश्चात् भारतीय साम्राज्य क्षेत्रीय राजपूत राज्यों में बट गया, क्षेत्रीय शासक अपने-अपने राज्य का शासन करने में व्यस्त थे अतएवं सम्पूर्ण भारत में सड़क एवं संचार तंत्र की स्थापना का उन्होंने कोई प्रयत्न नहीं किया। फिर भी अलबरूनी ने कन्नौज को केन्द्र मानकर उत्तर पश्चिम को जाने वाली दो सड़कों का उल्लेख किया है।<sup>8</sup> पहली सिरसाराम तथा डहमाला (जालन्धर) होकर कश्मीर जाती थी तथा दूसरी सड़क पानीपत, झेलम तथा काबुल से होकर गजनी तक जाती थी एक तीसरी सड़क भी थी जो कन्नौज से पाटलीपुत्र होकर सोमनाथ तक जाती थी। एक सड़क बजामा (गुजरात) से मुल्तान को जाती थी।<sup>9</sup>

तदोपरान्त गजनी शासकों ने भी गजनी तथा पंजाब के बीच सीधे मार्गों का विकास किया। उनकी सेनाएं मुल्तान, डच होती हुयी ऊपरी सिंध तक पहुंची बाद में यह मार्ग व्यापारियों के लिए लाभप्रद साबित हुआ। इससे गजनी तथा इरान के व्यापारी गुजरात व्यापार करने आने लगे। इसके पश्चात् भारत में तुर्क अफगान शासकों का शासनतन्त्र स्थापित हुआ जो अच्छी यातायात तथा संचार व्यवस्था की आवश्यकता से भलीभांति परिचित था। इस युग में पुराने मार्गों की मरम्मत तथा नये मार्गों का निर्माण करवाया गया। 13वीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों ने मंगोल समस्या से निपटने के लिए अपनी उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर बहादुर सैनिकों से युक्त मजबूत किलों की पूरी श्रृंखला का निर्माण करवाया तथा मार्गों पर शांतिपूर्ण परिवहन स्थापित करने के लिए विद्रोही राजपूत सरदारों को दमन किया गया। पोस्टल चौकियों की स्थापना ने यात्रियों के सुरक्षित परिवहन को सुनिश्चित किया। यात्री इन्बतूता ने भी सल्तनत कालीन पोस्टल चौकियों को प्रभावशाली बताया है। अच्छी यातायात एवं संचार व्यवस्था की स्थापना के कारण ही बलबन, अलाउद्दीन खिलजी तथा फिरोजशाह तुगलक के समय से व्यापार भली भांति विकसित हुआ सल्तनत काल के पश्चात् स्थापित मुगल साम्राज्य के प्रशासकों ने यातायात एवं संचार के महत्व को समझते हुए उसके विकास एवं विस्तार के लिए निरन्तर प्रयास किए, नए शहर बसाए, सड़कें व सराए बनवायी तथा मार्गों के किनारे पौधारोपण करवाया तथा डाक पहुंचाने के लिए थोड़ी-थोड़ी दूर पर पैदल तथा घुड़सवार संदेश वाहकों की व्यवस्था की गयी।

बाबर ने आगरा से काबुल के मार्ग पर प्रत्येक अट्टारह कोस पर छः घोड़ों से युक्त डाक चौकियों की स्थापना की थी। शेरशाह ने सुचारु सड़क तंत्र स्थापित करके देश भर में बड़ी संख्या में सरायों का निर्माण करवाया जो डाक चौकियों का काम भी पूरी दक्षता से करती थी। प्रत्येक सराय में दो घुड़सवार सदैव तैयार रहते थे तथा जो समाचार आते थे उसे लेकर रवाना हो जाते थे। साम्राज्य के विस्तार के साथ ही अकबर को अधिक दक्ष शासन प्रणाली की आवश्यकता पड़ी अतएवं उसने मौजूदा धावकों, डाक चौकियों आदि के अतिरिक्त कुछ मेवात के निवासियों को पत्र वाहकों के रूप में नियुक्त किया। धावकों को सम्पूर्ण मुगलकाल में पत्र व्यवहार के लिए नियुक्त किया गया।

#### **निष्कर्ष**

अतः निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि मुगलकाल में उपलब्ध मार्गों, परिवहन के साधनों एवं संचार माध्यमों ने न केवल तत्कालीन वाणिज्यिक

आवश्यकताओं को पूर्ण किया अपितु सैन्य अभियानों को सफल बनाकर राजनैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति में उल्लेखनीय योगदान दिया जिससे सम्पूर्ण मुगल साम्राज्य में यातायात गतिमान रहा था विभिन्न क्षेत्रों में सूचनाओं का समयानुसार प्रवाह बना रहा।

#### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीवास्त ए०एल० 'भारत का इतिहास' आगरा (1995) पृष्ठ-293
2. वही, पृष्ठ-524
3. डिलीके जीन 'ट्रांसपोर्ट एण्ड कम्यूनिकेशन इन इंडिया प्रायर टू स्टीम लोकोमोशन भाग-1, दिल्ली (1993) पृष्ठ VII
4. कोसाम्बी, डी०डी० 'द कल्चर एण्ड सिविलाइजेशन ऑफ एनसियन्ट इंडिया', लंदन (1959) पृष्ठ-62
5. वही, पृष्ठ-524
6. फारुकी, ए०के०एम० 'रोड एण्ड कम्यूनिकेशन इन मुगल इण्डिया' दिल्ली (1977) पृष्ठ-4
7. रॉलिन्सन, एच०जी० 'इंडिया ए शार्ट कल्चरल हिस्ट' लंदन (1955) पृष्ठ-87
8. फारुकी, ए०के०एम० 'रोड एण्ड कम्यूनिकेशन इन मुगल इण्डिया' दिल्ली (1977) पृष्ठ-5
9. अलबरुनीज इण्टाया (इएवर्ड सी सचाऊ द्वारा अनुदित) दिल्ली (1994) पृष्ठ-XVIII